उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान
समाचार पत्र

VOL-3 MAY-JUNE 2022

निर्देशक की कलम से .....

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान परिवार की ओर से बधाई

टी.एफ.आर.आई. समाचार पत्र के तीसरे अंक (मई–जून, 2022) के, प्रकाशन पर मुझे बहुत हर्ष है। यह अंक संस्थान के अनुसंधानकर्ताओं द्वारा की गई शोध गतिविधियों, संस्थान में आयोजित महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों, प्रकाशन और अन्य शोध उपलब्धियों सहित प्रकाशित किया जा रहा है, साथ ही संस्थान में उपलब्ध सुविधाओं का भी इसमें समावेश है।

मैं आशा करता हूँ, कि यह समाचार पत्र वानिकी अनुसन्धान से सम्बंधित शोधकर्ताओं, विभिन्न हितधारकों, नीति नियोजकों के लिए अत्यंत सहायक होगा

डॉ. जी. राजेश्वर राव, ए.आर.एस.
निदेशक, उ. व. अ. सं. जबलपुर

अंतर्निहित वस्तु

- प्रमुख आयोजन 1
- विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार समाचार 2
- नई परियोजनाएं 4
- आयोजन 7
- गणमान्य व्यक्तियों का दौरा 8
- परिचायात्मक दौरा 8
- प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण 9
- पुरस्कार और मान्यता 9
- मुख्य अतिथि/अतिथि वक्ता 9
- कार्यशाला/सेमिनार/महत्वपूर्ण बैठकें 10
- नई पहल 11
- नए प्रकाशन 12
- टी.एफ.आर.आई. जबलपुर में बिक्री के लिए उपलब्ध पौधों की प्रजातियां एवं संख्या 14
- विश्राम गृह सुविधा एवं शुल्क 14

प्रमुख आयोजन

क्षेत्रीय अनुसंधान सम्मेलन

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर और शुष्क वन अनुसंधान संस्थान जोधपुर के अधिकार क्षेत्र के तहत राज्यों (मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, गुजरात, राजस्थान एवं दादर नगर हवेली केंद्र शासित प्रदेश) में "वानिकी अनुसंधान" पर चर्चा करने के लिए, संयुक्त क्षेत्रीय अनुसन्धान सम्मेलन का आयोजन दिनाँक–22.06.2022 को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में किया गया। जिसका उद्घाटन भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद देहरादून के महानिदेशक श्री अरुण सिंह रावत, आई.एफ.एस. द्वारा (ऑन लाइन) किया गया। जिसमें दोनों संस्थानों के समूह समन्वयक (अनुसन्धान) द्वय डॉ तरुण कांत, वैज्ञानिक –जी, शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर एवं श्रीमति नीलू सिंह, वैज्ञानिक–जी, उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा क्रमशः दोनों संस्थानों में किये गए अनुसन्धान कार्यो का विवरण प्रस्तुत किया।

इस सम्मलेन में विशेष रूप से एक सत्र **"कृषि वानिकी"** विषय पर रखा गया, जिसमें निदेशक डॉ. जी. राजेश्वर राव द्वारा विभिन्न क्षेत्रों की कृषि वानिकी प्रणालियों पर व्याख्यान दिया।

"विश्व पर्यावरण दिवस "

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर में **"केवल एक पृथ्वी"** विषय पर गतिविधियों की श्रृंखला के साथ **"विश्व पर्यावरण दिवस"** 05 जून 2022 को मनाया गया। संस्थान ने केन्द्रीय विद्यालय, टी.एफ.आर.आई. एवं दिल्ली पब्लिक स्कूल, नीमखेड़ा के बच्चों के लिए **"रिसायकल वेस्ट पेपर "** और पर्यावरण के अनुकूल **"चारकोल और लीफ प्लेट्स – दोना"** बनाने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया, जो पर्यावरण के मुद्दों और उसके संरक्षण के कार्यों के बारे में चिंता पैदा करते हैं।

डॉ. जी. राजेश्वर राव, ए.आर.एस., निदेशक टी.एफ.आर.आई. ने छात्रों के साथ बातचीत की और छात्रों द्वारा तैयार उत्कृष्ट प्रस्तुतियों हेतु पर्यावरण के अनुकूल बांस से बने स्मृति चिन्ह स्वरूप पुरस्कारों से पुरस्कृत किया।

इस अवसर पर टी.एफ.आर.आई.के अधिकारियों और कर्मचारियों के बच्चों ने भी परिसर में देशज् पेड़ और बांस की प्रजातियों के रोपण कार्यक्रम में भाग लिया। निदेशक, टी.एफ.आर.आई. ने बच्चों को पेड़ लगाने के साथ–साथ उनकी देखभाल करने के लिए प्रोत्साहित करके पेड़ प्रजातियों के पौधे भी वितरित किए। कार्यक्रम का समापन टी.एफ.आर.आई. परिसर स्थित नर्मदा नदी की सहायक नदियों में से एक गौर नदी के तट पर वृक्षारोपण और स्वच्छता कार्य के साथ हुआ, जिसमें श्री एम. राजकुमार, नोडल अधिकारी, नर्मदा डी.पी.आर., संभाग प्रमुख, एवं संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से इस कार्यक्रम में भाग लिया।

एफ.आर.सी.एस.डी., छिंदवाड़ा ने 05.06.2022 को 24 एम.पी.बी.एन., एन.सी.सी. कैडेटों के साथ **"विश्व पर्यावरण दिवस"** मनाया। इसमें सिवनी, छिंदवाड़ा, बिछुआ, उमरनाला, नवेगांव, सौसर, पांढुर्ना और जुन्नारदेव क्षेत्र के कैडेट शामिल हुये। इस दौरान, पौधे लगाए गए, कार्यालय परिसर में कर्मचारियों और परियोजना कर्मचारियों द्वारा पर्यावरण से संबंधित मुद्दों पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, सभी कैडेटों ने सक्रिय रूप से कार्यक्रम में भाग लिया और कार्यक्रम को सफल बनाया।

उ. व. अ. स.
समाचार पत्र

VOL-3 MAY-JUNE 2022

विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार समाचार

वैज्ञानिक मध्यवर्ती के माध्यम से जंगल की आग का प्रबंधन

5 कार्बन पूल (ए.जी.बी.) (पेड़, जड़ी–बूटियाँ, झाड़ियाँ), जमीन के नीचे बायोमास (बी.जी.बी.), डेडवुड, कूड़े और मिट्टी) और स्थलीय वनस्पतियों में जंगल की आग के कारण नुकसान का अनुमान लगाने के लिए, वैज्ञानिकों और परियोजना कर्मचारियों की एक टीम ने हाल ही में दौरा किया। महाराष्ट्र के 2 वन प्रभाग (सावंतवाड़ी और कोल्हापुर) और 4 रेंज (अम्बोली, कुडाल, सावंतवाड़ी, पाटने) चल रहे अनुसंधान परियोजना 'वन अग्नि अनुसंधान और ज्ञान प्रबंधन' (ए.आई.सी.आर.पी.–14) के तहत मौजूदा आग के मौसम के मई–जून 2022 के दौरान डेटा एकत्र करने के लिए– सी. ए. एम. पी. ए., एम. ओ. ई. एफ. एन्ड सी. सी., नई दिल्ली द्वारा वित्त पोषित। यह कार्बन स्टॉक (5 पूल) और स्थलीय वनस्पतियों के संदर्भ में जंगल की आग के कारण तत्काल नुकसान की मात्रा निर्धारित करने में मदद करेगा।

धीरज कुमार गुप्ता
वैज्ञानिक–डी
वन पारिस्थितिकी और जलवायु परिवर्तन

प्रयोग में वनस्पति सर्वेक्षण व कूड़े का संग्रह

क्षेत्र सर्वेक्षण के दौरान मिट्टी संग्रह

वन आनुवंशिक संसाधनों का संरक्षण

मध्य प्रदेश के रीवा, सीधी और सतना वन संभागों में एफ.जी.आर. मैपिंग और बीज संग्रह के लिए कुल सात बीज आबादी की पहचान की गई, जिसमें चयनित आबादी में *अकेशिया कटेचू, बुचनिया कोचिनचिनेंसिस, एनोगियसस लैटिफोलिया, बोसवेलिया सेराटा, स्टरकुलिया यूरेन्स* और *अजाड़िरिक्टा इंडिका* शामिल हैं।

मनीष कुमार विजय
वैज्ञानिक–बी
वन विस्तार प्रभाग

खरपतवार,लैंटाना अधिक्रमण का ऑकलन

वन क्षेत्रों में लैंटाना के प्रभावी प्रबंधन के लिए मध्यप्रदेश के रीवा, सीधी और सतना जिले में फाइटो–सामाजिक डेटा का संग्रह, लैंटाना के अधिक्रमण की स्थिति और मिट्टी की गुणवत्ता के लिए दौरा किया गया, जिसमें पुर्नजनन पर लैंटाना हटाने के प्रभाव का आकलन करने के लिए साइट ट्रेल्स का उपयोग लैंटाना के विभिन्न घनत्वों में किया गया एवं विभिन्न प्रयोगात्मक प्लॉटों के सूखे बायोमास को चारकोल में परिवर्तित कर देखा गया ताकि लैंटाना के जैव अपशिष्ट का उपयोगी उत्पादों में उपयोग किया जा सके।

नीरज प्रजापति
वैज्ञानिक–बी
वनसंवर्धन, वन प्रबंधन और कृषि वानिकी प्रभाग

उ. व. अ. स.
समाचार पत्र

VOL-3 MAY-JUNE 2022

मध्य भारत में यूकेलिप्टस और कैसुरीना क्लोनों का क्षेत्र परीक्षण

मध्य भारतीय परिस्थितियों में यूकेलिप्टस और कैसुरीना क्लोन के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के लिए, जबलपुर, उमरिया और बालाघाट जिले में यूकेलिप्टस कैमलडुलेंसिस और कैसुरीना हाइब्रिड क्लोन के बहुस्थानिक परीक्षण स्थापित किए गए थे। विकास के प्रदर्शन के आधार पर, मध्य भारत में खेती के लिए सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले क्लोनों की पहचान की जाएगी।

डॉ. नसीर मोहम्मद
वैज्ञानिक–डी
वन आनुवंशिकी और वृक्ष सुधार प्रभाग

हल्दिना कॉर्डिफोलिया (हल्दू) का संरक्षण

हल्दू का सी.पी.टी.

हल्दू के फल

हल्दू के एक फल का चित्र

हल्दू एक महत्वपूर्ण लकड़ी की प्रजाति है और इसका उच्च औषधीय महत्व है। अतिदोहन के कारण वनों में इसकी जनसंख्या तेजी से घट रही है और संकटग्रस्त श्रेणी में आ रही है।

एक किलोग्राम भार में लगभग दस लाख हल्दू के बीज पाए जाते हैं, चूंकि बीज बहुत छोटे और वजन में हल्के होते हैं, इसलिए बीजों को इकट्ठा करना बहुत कठिन कार्य है।

मध्य भारत (मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़) राज्यों के लिए बेहतर जर्मप्लाज्म के चयन हेतु एक अध्ययन शुरू किया गया है ताकि आगे गुणन के साथ–साथ इसका संरक्षण भी किया जा सके।

निखिल वर्मा
वैज्ञानिक–बी
वन आनुवंशिकी और वृक्ष सुधार प्रभाग

टी. एफ. आर. आई. द्वारा सागौन (*टेक्टोना ग्रैंडिस*) में सुधार की गतिविधियाँ

संस्थान सागौन (*टेक्टोना ग्रैंडिस*) सुधार हेतु कुछ गतिविधियों को क्रियान्वित कर रहा है, जिसमें प्लस ट्री का चयन और संतति परीक्षण, जर्मप्लाज्म बैंक, सीडलिंग सीड ऑर्चर्ड और क्लोनल सीड ऑर्चर्ड की स्थापना शामिल है। 4 राज्यों मध्य प्रदेश (एम.पी.), छत्तीसगढ़ (सी.जी.), महाराष्ट्र (एम.एस.) और ओडिशा (ओ.आर.) में कुल 193 धन वृक्षों का चयन किया गया है। इन पेड़ों का चयन तुलनात्मक वृक्ष विधि द्वारा फेनोटाइपिक विकास लक्षणों जैसे ऊंचाई, जी.बी.एच., स्कंध की ऊंचाई, (bole height) , काउत व्यास, रोग व्याधि, शाखा कोण, आदि के रूपमितीय आंकडो के आधार पर किया गया। कुछ पेड़ों की अर्द्धसंतति को भी चयनित किया गया था और वर्ष 2019 में मध्य प्रदेश (एम.पी.), छत्तीसगढ़ (सी.जी.), महाराष्ट्र (एम.एस.) और ओडिशा (ओ.आर.) के 29 परिवारों का प्रतिनिधित्व करते हुए एक संतति परीक्षण भी स्थापित किया गया। मध्य प्रदेश (एम.पी.), छत्तीसगढ़ (सी.जी.), महाराष्ट्र (एम.एस.) और ओडिशा (ओ.आर.) के 31 वृक्ष परिग्रहणों का प्रतिनिधित्व करने वाला एक जर्मप्लाज्म बैंक वर्ष 2020 में स्थापित किया गया। वर्ष 2019 में एक सीडलिंग सीड ऑर्चर्ड (एस.एस.ओ.) की स्थापना एम.पी., सी.जी., एम.एस. और ओ.आर. के 33 परिवारों का प्रतिनिधित्व करते हुए की गई थी। इसी प्रकार वर्ष 2021 में मध्य प्रदेश के पांच नजदीकी कृषि–पारिस्थितिक क्षेत्रों से 15 क्लोनों का प्रतिनिधित्व करते एक क्लोनल बीजोउद्यान (सी.एस.ओ.) स्थापित किया गया।

टेक्टोना ग्रैंडिस (प्लस ट्री)

उ. व. अ. स.
समाचार पत्र

VOL-3 MAY-JUNE 2022

टेक्टोना ग्रैंडिस का संतति परीक्षण

टेक्टोना ग्रैंडिस का बीजांकुर बीजोउद्यान

जर्मप्लाज्म बैंक (टेक्टोना ग्रैंडिस)

टेक्टोना ग्रैंडिस के ग्राफ्टेड क्लोनल पौधे

टेक्टोना ग्रैंडिस का क्लोनल बीजोउद्यान

डॉ. प्रमोद कुमार
वैज्ञानिक–डी
वन आनुवंशिकी और वृक्ष सुधार प्रभाग

छत्तीसगढ़ में फर्न, पेड़ों का अवलोकन

कंधी सिंह, ए.सी.टी.ओ.
वन संवर्धन, वन प्रबंधन एवं कृषि वानिकी प्रभाग

छत्तीसगढ़ राज्य के दौरे के समय दंतेवाड़ा वन मंडल में बैलाडीला लौह खदान के मार्ग पर फर्न के पौधे जिनकी ऊंचाई लगभग 2–3 मीटर तक देखी गई। सामान्यतः यह प्रजातियां झाड़ी के रूप में बिखरी हुई होती हैं।

फर्न प्रजाति

नई परियोजनाएं

- मध्य प्रदेश वन विकास निगम (भोपाल) द्वारा अनुमोदित "सागौन और बांस में जैव उर्वरक, जैविक उर्वरक का निर्माण एवं अनुप्रयोग के साथ रोपणी कामगार (नर्सरी स्टॉफ) की कार्यकुशलता को बढाने का कार्य " परियोजना आरम्भ की गई ।

उ. व. अ. स.
समाचार पत्र

VOL-3 MAY-JUNE 2022

सागौन (*टेक्टोना ग्रैंडिस*) के कीटों का जैविक नियंत्रण : ट्राईको कार्ड

श्रीमति शशि किरण बर्वे
तकनीकी अधिकारी
वन संरक्षण प्रभाग

- मध्य भारत में सागौन (*टेक्टोना ग्रैंडिस*) एक महत्वपूर्ण इमारती लकड़ी है, लेकिन डिफोलिएटर और स्केलेटोनाइजर के गंभीर संक्रमण के कारण शोधकर्ताओं द्वारा तने की वृद्धि में लगभग 40% नुकसान आँका गया है।
- सागौन डिफोलिएटर, *हिबलिया प्यूरा* और सागौन लीफ स्केलेटोनाइजर, *यूटेक्टोना मेकरेलिस* को जैविक साधनों के माध्यम से नियंत्रित करने के लिए, कीटविशेषज्ञ डॉ. के. सी. जोशी (सेवानिवृत्त), डॉ. नितिन कुलकर्णी और श्री सुभाष चंद्र ने स्थानीय रूप से उपलब्ध अंडा परजीवी, ट्राइकोग्रामा रोइ (हाइमेनोप्टेराः ट्राइकोग्रामेटिडी) की सामूहिक–पालन तकनीक और रिलीज विधियों को मानकीकृत किया और ट्राईकोकार्ड विकसित किया।
- ट्राइकोग्रामा जो एक बहुत ही सूक्ष्म अंडा परजीवी कीट है, जो कि, विभिन्न प्रकार के कीड़ों के अंडों पर अपने अंडे देता है और उन अंडों पर अपना जीवन चक्र पूरा करता है, जिसके कारण वे परजीवी नष्ट हो जाते हैं।

ट्राईको कार्ड तैयार करने की विधि

- प्रयोगशाला में राइस मोथ *कॉंरसाईरा सीफैलोनीका* का गुणन।
- राइस मोथ के अंडे एकत्र करें और इसे –5 डिग्री सेंटीग्रेड के लिए 1 घंटे के लिए ठंडा करें।
- राइस मोथ के ठंडे अंडों को गोंद (25%) की सहायता से एक मोटे कागज पर चिपकाया जाता है।
- राइस मोथ कार्ड के साथ ट्राइकोग्रामा पैरासिटोइड्स कार्ड डालें और पॉलिथीन बैग में सील करते है।
- ट्राइकोग्रामा चॉवल के पतंगे के अंडे पर अपने अंडे देकर अपना जीवन चक्र पूर्ण करती है और ये अंडे नष्ट हो जाते हैं और वे गुणन करते रहते हैं। इस परजीवी कार्ड को **ट्राइको कार्ड** कहा जाता है।
- तैयार ट्राइको कार्ड्स को चार मौसमों में संक्रमित क्षेत्रों में छोड़ दिया जाता है, जहां वे हानिकारक कीड़ों (1.25 लाख/हेक्टेयर) के अंडों को नष्ट कर देते हैं।
- ट्राइको कार्ड का आकार – 11 से.मी. × 15 से.मी.। एक कार्ड में लगभग 25,000 परजीवी अंडे होते हैं। एक कार्ड की कीमत लगभग 200 रुपये है।

कॉंरसाईरा सीफैलोनीका के अंडे

कार्ड पर अंडे फैलाना

ट्राईकोकार्ड की पैकिंग

ट्राईकोकार्ड

उ. व. अ. स.
समाचार पत्र

VOL-3 MAY-JUNE 2022

कीट संग्राहालय

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के कीट संग्रहालय की स्थापना डॉ. के. सी. जोशी, वन कीट विज्ञान विभाग के प्रमुख श्री आर. के. नामदेव (आई. एफ. एस.), निदेशक, पर्णपाती वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के मार्गदर्शन में वर्ष – 1988–1990, की गई थी

वर्तमान में संग्रहालय में कीटों की लगभग 763 प्रजातियां पहचानी गई हैं, जिन्हें लिपोडोप्टेरा, कोलप्टेरा, हेमिप्टेरा, होमोप्टेरा, हाइमनोप्टेरा, ऑर्थोप्टेरा और डिप्टेरा आदि क्रम के कीटों सहित परिग्रहण संख्या के साथ व्यवस्थित किया गया है।

अधिकांश कीट के नमूने मध्य भारत, असम, उत्तर पूर्व के अरुणाचल प्रदेश आदि सहित देश के विभिन्न राज्यों से एकत्र किए गए थे।

परियोजना "कान्हा राष्ट्रीय उद्यान के कीट विज्ञान सर्वेक्षण" (2003–04) के तहत अचानकमार अमरकंटक बायोस्फीयर रिजर्व से एकत्र किए गए, कीट नमूनों की भी पहचान की गई है और कीट संग्राहालय में संरक्षित किया गया है।

वैज्ञानिक डॉ. मोहम्मद यूसुफ, डॉ. एन. रॉय चौधरी, डॉ. एन. कुलकर्णी, डॉ. पी. बी. मेश्राम, और श्री सुभाष चंद्र और तकनीकी अधिकारियों श्री रामभजन सिंह, श्री आर. के. मालवीय, एवं श्रीमती शशि किरण बर्वे ने कीट संग्राहालय को उन्नत करने में योगदान दिया। यह संग्रहालय शोधार्थीयों, विधार्थियों तथा आगंतुकों के ध्यानाकर्षण एवं ज्ञानवर्धन हेतु उपयोगी है।

श्रीमति शशि किरण बर्वे
तकनीकी अधिकारी
वन सुरक्षा प्रभाग

फफूँद संग्राहालय

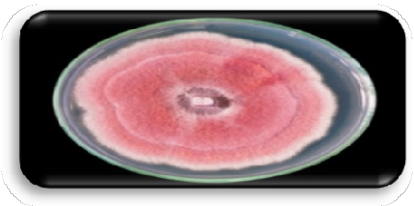

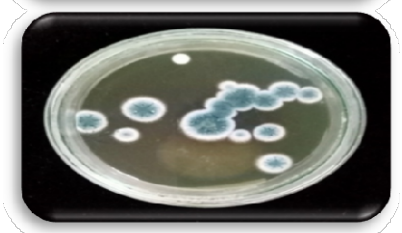

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के फफूँद संग्राहालय की स्थापना वन रोग विशेषज्ञ सेवानिवृत्त स्वर्गीय डॉ. जमालुद्दीन, के मार्गदर्शन में डॉ. एन. एस. के. हर्ष, डॉ. आर. के. वर्मा., डॉ. के. के. सोनी, डॉ. व्ही. एस. डडवाल, एवं डॉ. सी. के. तिवारी सेवानिवृत्त, वैज्ञानिकगण एवं तकनीकी अधिकारियों, श्री पी. एस. राजपूत, श्री एच. एल. असाटी, श्री दशरथ तुरकने, एवं श्री ए. के. ठाकुर (सेवानिवृत्त) द्वारा विभिन्न राज्यों जैसे– मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा आदि से भिन्न– भिन्न प्रकार की फफूँदों को एकत्रित कर उन्हें पहचाना गया, साथ ही उन्हें संरक्षित भी किया। वर्तमान में पहचान की गई फफूँदों की संख्या 251 हो चुकी है, जिनका संस्थान में चल रही विभिन्न परियोजनाओं में समय–समय पर प्रयोग किया जाता है। यह फफूँदों का संग्रह शोधार्थियों, विद्यार्थियों एवं आगंतुकों के ज्ञानवर्धन हेतु बहुत उपयोगी है।

दशरथ तुरकने तकनीकी
अधिकारी
वन सुरक्षा प्रभाग

आयोजन

"अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस"

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर और वन अनुसंधान कौशल विकास केंद्र छिंदवाड़ा ने 6 मई 2022 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, 2022 के अवसर पर योग उत्सव का आयोजन किया।

आयुष मंत्रालय (भारत सरकार) के आदेश के अनुपालन में उ. व. अ. सं., जबलपुर और एफ. आर. सी.–एस. डी., छिंदवाड़ा के वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, 2022 के आयोजन की 50 दिनों के पूर्व पूर्वाभ्यास के लिए सक्रिय रूप से भाग लिया, जिसमें उ. व. अ. सं., जबलपुर में डॉ राजेश मिश्रा, ए. सी. टी. ओ., और एफ. आर. सी.–एस. डी., छिंदवाड़ा में प्रशिक्षित योग चिकित्सक के मार्गदर्शन में योग आसन, प्राणायाम और ध्यान का अभ्यास किया गया।

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2022 मनाया गया

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर और इसके उपग्रह केंद्र वानिकी अनुसंधान एवं कौशल विकास केंद्र, छिंदवाड़ा ने 21 जून 2022 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2022 का आयोजन किया। कार्यक्रम का जश्न मनाने के लिए, वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों ने डॉ राजेश मिश्रा, ए. सी. टी. ओ, टी. एफ. आर. आई. द्वारा तथा वानिकी अनुसंधान एवं कौशल विकास केंद्र, छिंदवाड़ा में योग विशेषज्ञ श्रीमती अर्पिता शुक्ल, पतंजलि योगपीठ के मार्गदर्शन में विभिन्न योग आसन, प्राणायाम और ध्यान का अभ्यास किया।

डॉ. जी. राजेश्वर राव, ए. आर. एस., निदेशक टी. एफ. आर. आई ने सभी कर्मचारियों के स्वस्थ जीवन की कामना की और उन्हें स्वस्थ जीवन जीने और साथ ही साथ कार्य कुशलता में सुधार करने के लिए योग को अपनी दिनचर्या के हिस्से के रूप में अपनाने हेतु प्रेरित किया। उन्होंने सांकेतिक सम्मान के रूप में योग विशेषज्ञ को बायोडिग्रेडेबल बांस निर्मित स्मृति चिन्ह भी भेंट किये।

"जनजातीय मेला"

उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर एवं एफ. आर. सी.–एस.डी., छिंदवाड़ा ने मध्य प्रदेश के मंडला जिले के ग्राम रामनगर में जनजातीय कार्य मंत्रालय द्वारा आयोजित 5 वें आदि उत्सव (जनजातीय मेला) में भाग लिया।

इस मेगा आयोजन की अध्यक्षता राज्य के माननीय राज्यपाल श्री मंगू भाई पटेल जी ने की। इस कार्यक्रम में श्री अर्जुन मुंडा जी, जनजातीय मामलों के केंद्रीय मंत्री, श्री फग्गन सिंह कुलस्ते जी, केंद्रीय इस्पात और ग्रामीण विकास राज्य मंत्री, श्रीमती रेणुका सिंह जी, केंद्रीय जनजातीय मामलों की राज्य मंत्री, कुंवर विजय शाह, वन मंत्री, सांसद, श्री विष्णु देव सिंह, डिप्टी सी.एम., त्रिपुरा, श्रीमती संपतिया उइके, राज्यसभा सांसद और केंद्र, राज्य और स्थानीय प्रशासन के अधिकारीगण एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस अवसर पर माननीय मंत्री श्री कुलस्ते जी ने वानिकी प्रयोगो के माध्यम से आदिवासियों की आजीविका के उत्थान तथा योगदान के संबंध में अपने भाषण में उ. व. अ. सं., जबलपुर का भी विशेष उल्लेख कर उत्साहवर्धन किया।

"आतंकवाद विरोध दिवस"

उ. व. अ. सं.,जबलपुर में 20 मई 2022 को आतंकवाद विरोध दिवस का आयोजन

इस दिवस के अवसर पर संस्थान के सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों ने एकजुट होकर सद्भाव और शांति को बढ़ावा देकर, आतंकवाद और हिंसा का विरोध करने का संकल्प लिया।

उ. व. अ. स.
समाचार पत्र

VOL-3 MAY-JUNE 2022

"अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस"

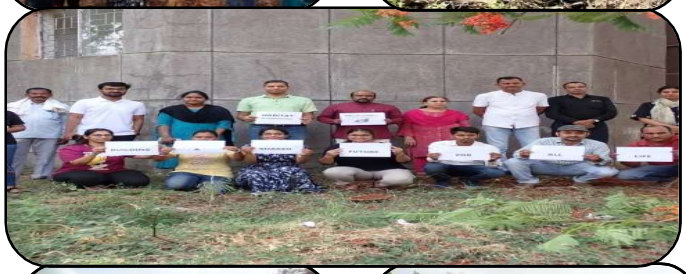

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के वन पारिस्थितिकी और जलवायु परिवर्तन प्रभाग ने अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस २०२२ के वाक्यांशानुसार नारे के अनुरूप **सभी जीवों की लिये एक साझा भविष्य निर्माण** हेतु परिसर स्थित मार्ग के किनारो पर लगे विभिन्न वृक्षों पर पक्षियों एवं अन्य वन्य जीवों की प्यास बुझाने हेतु लगभग 20 मिटटी के मर्तबान स्थापित किये। इसके अलावा वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम 1972 के तहत् आई. यू. सी. एन. लाल सूची के संकटग्रस्त प्रजातियों और अनुसूचीनुसार भारतीय रॉक पायथन के आवास को उ. व. अ. सं. परिसर में सीमांकित किया एवं इसके संरक्षण के लिये कार्यवाही की।

एफ. आर. सी. – एस. डी., छिंदवाड़ा ने जवाहर नवोदय विद्यालय, सिंगोडी, छिंदवाड़ा के 10वीं और 11वीं कक्षा के छात्रों के लिए क्षेत्र का भ्रमण किया। जिसमें 74 विद्यार्थियों ने भाग लिया एवं उक्त कार्यक्रम के अंतर्गत अपनी जन्मभूमि सिंगोडी छिंदवाड़ा के संरक्षण के प्रति जागरूकता का परिचय दिया।

गणमान्य व्यक्तियों का दौरा

श्री रमेश श्रीवास्तव, आई. एफ. एस., मुख्य कार्यकारी अधिकारी, कैम्पा, मध्य प्रदेश ने उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर का दौरा किया। श्री श्रीवास्तव जी ने संस्थान द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की। उन्होंने उ. व. अ. सं. में अपने पूर्व में किये गए कार्यो के अनुभवों को साझा किया और वैज्ञानिकों के साथ बातचीत की।

डॉ. आर. के. वाधवा, वरिष्ठ चिकित्सक, ए. डी. एल. एम. एस. ने उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर का दौरा किया। उन्होंने टी. एफ. आर. आई. की महत्वपूर्ण गतिविधियों और औषधीय पौधों के संग्रह के लिए संग्रहालय का दौरा किया। डॉ. वाधवा ने संस्थान द्वारा किए गए कार्यों की सराहना भी की।

परिचायात्मक दौरा

27/05/2022 को आर.डी.वी.वी .कॉलेज जबलपुर के छात्रों का परिचायात्मक दौरा

डॉ. ननिता बेरी, वैज्ञानिक–एफ और श्री मनीष कुमार विजय, वैज्ञानिक–बी द्वारा बी. एस. सी. (कृषि) संकाय, आर. डी. वी. वी. विश्वविद्यालय के छात्रों को संग्रहालय संदर्भित प्रदर्शन एवं कृषि वानिकी मॉडल के बारे मे जानकारी प्रदाय की।

उ. व. अ. स.
समाचार पत्र

VOL-3 MAY-JUNE 2022

प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के श्री ए. जे. के. असैया, वैज्ञानिक–सी और डॉ के. दर्शन, वैज्ञानिक–बी ने सिवनी में मध्य प्रदेश वन विकास निगम (भोपाल) द्वारा आयोजित क्षेत्रीय कार्यशाला में नर्सरी के अधिकारियों को जैविक खाद और जैव उर्वरक अनुप्रयोगों पर व्याख्यान दिया। साथ ही साथ जीवामृत की तैयारी के लिए व्यावहारिक प्रदर्शन आयोजित किया । इस कार्यशाला में चार वन संभागों–क्रमशः बैतूल, सिवनी, छिंदवाड़ा और बालाघाट से कुल 50 प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण में भाग लिया। श्री एस. एस. उद्दे, (आई. एफ. एस.) सी. सी. एफ. सिवनी ने प्रशिक्षुओं को संबोधित किया और वानिकी में जैव/जैविक उर्वरकों के महत्व के बारे में बताया।

एफ. आर. सी. एस. डी., छिंदवाड़ा ने 9.5.2022 से 13.5.2022 तक इंटर्नशिप कार्यक्रम गवर्नमेंट गर्ल्स कॉलेज, छिंदवाड़ा के एम. एच. एस. सी. (अंतिम वर्ष) की छात्रायों हेतु आयोजित किया।

पुरस्कार और मान्यता

- डॉ. के. जी. तेजवानी पुरस्कार एग्रोफोरेस्ट्री रिसर्च एंड डेवलपमेंट में उत्कृष्टता–2020 के लिये डॉ जी. राजेश्वर राव, निदेशक, टी. एफ. आर. आई., जबलपुर को कृषि वानिकी अनुसंधान और विकास के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया।
- डॉ. मोहन सी., वैज्ञानिक–बी, को 06–08 जून, 2022 (वर्चुअल मोड), गुरु काशी विश्वविद्यालय, तलवंडी, पंजाब में आयोजित "**कृषि और संबद्ध विज्ञान के अनुसंधान नवाचार और सतत विकास में वैश्विक पहल**" पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के अवसर पर "**एन्टोमोलॉजी के क्षेत्र में एच. एस. प्रुथी पुरस्कार**" से सम्मानित किया गया।
- डॉ. मोहन सी., वैज्ञानिक–बी, को निफ्टेम, तंजावुर, तमिलनाडु में आयोजित फसल कटाई के बाद के नुकसान को कम करने के लिए संदर्भ–I **"प्रौद्योगिकी के तहत फसल कटाई के बाद प्रबंधन पर"** राष्ट्रीय आभासी सम्मेलन में **"सर्वश्रेष्ठ मौखिक प्रस्तुति पुरस्कार"** से सम्मानित किया गया।

मुख्य अतिथि/अतिथि वक्ता

- डॉ. जी. राजेश्वर राव, निदेशक, टी. एफ. आर. आई., जबलपुर ने "सत्र–IV: एक्वाकल्चर, पोल्ट्री और पशु भोजन संसाधन" पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव में **"कृषि–वानिकी पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावः अनुकूलन रणनीतियों"** पर आई. सी. ए. आर.–आई. सी. ए. आर.–भारतीय बाजरा अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद में 14 मई, 2022 को एक व्याख्यान (वर्चुअल मोड) दिया।
- श्रीमती नीलू सिंह, जी. सी. आर., वैज्ञानिक–जी, टी. एफ. आर. आई., जबलपुर ने ए. एफ. आर. आई–टी. एफ. आर. आई. संयुक्त क्षेत्रीय अनुसंधान सम्मेलन **''शुष्क क्षेत्रों के कृषि वानिकी के विशेष संदर्भ के साथ वानिकी अनुसंधान की स्थिति''** के अनुसार ''**टी. एफ. आर.आई. में अनुसंधान कार्य का अवलोकन**'' पर व्याख्यान (वर्चुअल मोड) दि0 22 जून 2022 को दिया।
- डॉ. जी. राजेश्वर राव, ए. आर. एस., निदेशक, टी. एफ. आर. आई, जबलपुर ने ए. एफ. आर. आई.–टी. एफ. आर. आई. संयुक्त क्षेत्रीय अनुसंधान सम्मेलन ''**शुष्क क्षेत्रों के कृषि वानिकी के विशेष संदर्भ के साथ वानिकी अनुसंधान की स्थिति**'' के दौरान शुष्क क्षेत्र के कृषि वानिकी पर तकनीकी सत्र में व्याख्यान (वर्चुअल मोड) दि0 22 जून 2022 को दिया।
- डॉ. ननिता बेरी, वैज्ञानिक–एफ और प्रभागाध्यक्ष, वन विस्तार प्रभाग, टी. एफ. आर. आई. ने कृषि वानिकी पर कृषि विज्ञान केंद्र, मंडला द्वारा आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में हितधारकों हेतु कृषि वानिकी एवं इसके महत्व पर व्याख्यान दिया।

उ. व. अ. स.
समाचार पत्र

VOL-3 MAY-JUNE 2022

कार्यशाला / सेमिनार / महत्वपूर्ण बैठकें

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान (उ. व. अ. सं.),जबलुपर में दिनांक 23.06.2022 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन ।

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में संघ की राजभाषा नीति के अनुपालन एवं सहायक महानिदेशक, मीडिया एवं विस्तार प्रभाग, विस्तार निदेशालय, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के निहित निदेशों के अनुसरण में संस्थान में सेवारत तकनीकी अधिकारी एवं वरिष्ठ तकनीकी अधिकारियों के लिए 23 जून 2022 को संस्थान के निदेशक, डॉ. जी. राजेश्वर राव, ए. आर. एस. की अध्यक्षता में एक दिवससीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

कार्यशाला का शुभारंभ निदेशक महोदय के उद्बोधन से हुआ । तत्पश्चात् श्री विजयकुमार, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने प्रतिभागियों को संघ का राजकीय कार्य हिन्दी में करने के लिए भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2022–23 के बिन्दुवार मदों से अवगत कराते हुए हिन्दी–कार्याभ्यास कराया ।

- डॉ. जी. राजेश्वर राव, ए. आर. एस., निदेशक, टी. एफ. आर. आई. ने 13.05.2022 को सतपुड़ा भवन, भोपाल में एस. एफ. आर. आई. के 46वें आर. ए. सी. की बैठक में भाग लिया।
- डॉ. जी. राजेश्वर राव, ए. आर. एस., निदेशक महोदय ने 9–10 जून, 2022 को राज्य वन अनुसंधान संस्थान(एस. एफ. आर. आई.) , जबलपुर द्वारा **"मध्य प्रदेश में अवक्रमित वन पारिस्थितिकी प्रणालियों का पुनर्वासः उभरते परिदृश्य और आगे की राह"** पर आयोजित एक कार्यशाला में भाग लिया।
- डॉ. जी. राजेश्वर राव, ए. आर. एस., निदेशक महोदय ने 10 जून 2022 तारीख को इंस्टीट्यूट ऑफ वुड साइंस एंड टेक्नोलॉजी (आई.डब्ल्यू.एस.टी.), बेंगलुरु द्वारा आयोजित हाइब्रिड मोड में **"एग्रोफोरेस्ट्री मुद्दों पर विशेष फोकस के साथ भारत के दक्षिणी राज्यों में वानिकी अनुसंधान"** पर एक क्षेत्रीय अनुसंधान सम्मेलन में भाग लिया ।
- राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठक, अप्रैल–जून 2022 बैठक निदेशक महोदय की अध्यक्षता में 23–6–2022 को आयोजित की गई।
- श्रीमती नीलू सिंह, वैज्ञानिक–जी और जी. सी. आर. ने **"मध्यप्रदेश की विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार नीति"** दि0 29.06.2022 को जबलपुर में परामर्श बैठक (एम.पी.–एस.टी.आई.पी.:2022): में भाग लिया।
- डॉ. जी. राजेश्वर राव, ए. आर. एस., निदेशक, टी. एफ. आर. आई. और डॉ अविनाश जैन,

डॉ. जी. राजेश्वर राव, ए.आर.एस., निदेशक और डॉ. ननिता बेरी, वैज्ञानिक–एफ और श्री राठौड़ दिग्विजयसिंह उम्मेदसिंह, वैज्ञानिक–बी ने आई0सी0आर0ए0एफ0 नई दिल्ली का दिनाँक 30 –31 मई को भ्रमण किया एवं नवारांभित टी.ओ.एफ.आई. परियोजना अंतर्गत कार्यक्रमों की रूपरेखा पर अन्य सहभागियों के साथ चर्चा मे भाग लिया।

उ. व. अ. स.
समाचार पत्र

VOL-3 MAY-JUNE 2022

नई पहल

भारत सरकार के निर्देशानुसार, प्लास्टिक के उपयोग से बचाव हेतु संस्थान में पत्तियों से दोना प्लेट और बांस से मोमेंटो को तैयार करके उनका आधिकारिक कार्यक्रमों के दौरान उपयोग किया गया।

कृषि वानिकी संभाग की मृदा परीक्षण प्रयोगशाला का उद्घाटन

निदेशक टी. एफ. आर. आई. जबलपुर द्वारा (ए.आई.सी.आर.पी. –30 परियोजना के तहत) वन संवर्धन, वन प्रबंधन और कृषि वानिकी प्रभाग, उ.व.अ.सं., की पुनर्निमित कृषि वानिकी प्रयोगशाला का उद्घाटन दिनाँक 03–06–2022 को किया गया।

उ. व. अ. स.
समाचार पत्र

VOL-3 MAY-JUNE 2022

नया प्रकाशन

पुस्तकें / अध्याय

- सिंह, नीलू और राव, जी. आर. (2022).कृषि वानिकी में औषधीय पौधे ओर मूल्यसंवर्धन के माध्यम् से आजीविका के अवसर Page 1-74.

- अक्षय कुमार एच.एम., मेहुली सरकार, दर्शन, के, थुंगरी घोषाल, काव्या बी. एस., बिष्णु माया बसायल, ए. जे. के. असैया और ननिता बेरी, गैनोडर्मा: जैव विविधता, पारिस्थितिक महत्व, और इसका प्रबंधन। फंगल बायोलॉजी, विजय रानी राजपाल एट आल. (संस्करण): फंगल विविधता, पारिस्थितिकी और नियंत्रण प्रबंधन. 978–981–16–8876–8, 516623_1_ स्प्रिंगर नेचर में।

शोध पत्र

- Bhadrawale, D., Shirin, F., Patel, K., Panika, S., Hardaha, P., Gupta, T., Mohhamad, N. and Rao, G R. (2021). Effect of different plant growth regulators and additives on *in vitro* culture establishment of *Pseudoxytenanthera stochsii*. *Indian Journal of Tropical Biodiversity* (*Special Issue on Bamboo*), 29(1) 202132-39.
- Kumar, P., Shirin, F. and Rao, G.R. (2021). Enhancement of productivity of bamboo plantations through selection of superior clumps and management interventions. *Indian Journal of Tropical Biodiversity* (*Special Issue on Bamboo*), 29(1) 202166-71.
- Kumar, P., Patel, P.K. and Sonkar,M.K., (2022). Propagation through juvenile shoot cuttings in difficult-to-root *Dalbergia latifolia* – examining role of endogenous IAA in adventitious rooting. *Plant Physiology Reports* 27(2): 242-249. https://doi.org/10.1007/s40502-022-00664-x.
- Saudagar, I.A., Jahan, F., Shirin, F., Tiwari,A., Pal, A., and Maravi, S., (2022). Investigation of phytochemicals and determination of compounds of *Phyllanthus emblica* Linn. and *Citrus limon* (L.) Burm. through proximate analysis and in-vitro antimicrobial activity against pathogenic fungi *Aspergillus flavus* .*World Journal of Advanced Research and Reviews*. 14 (3), 203-213.
- Shirin, F., Saudagar, I. A., Mehra, V., Maravi, S., Sonkar, M. K., Kumar, P. and Rao, G. R. (2021). Influence of genotype on adventitious rhizogenesis through macropropagation in *Bambusa vulgaris* and *Bambusa nutans*. *Indian Journal of Tropical Biodiversity* (*Special Issue on Bamboo*), 29(1) 202147-53.
- Vijay, M. K., Sharma, R.S., Maloo, S.R., Jain, V., and Sharma, A., (2022). *Buchanania lanzan* Spreng (Chironji): An endangered socio-economic forest tree species of Central India. *The Pharma Innovation Journal*. SP-11(6): 336-342.
- Vijay, M. K., Berry, N., Prajapati, N., and Rathod, D.U., (2022). Conservation and Seed Quality enhancement of *Buchanania lanzan* Spreng: an endangered NWFP species of Madhya Pradesh. *Biological Forum – An International Journal* .14(2): 1111-1116.

सामान्य लेख

- Banerjee, S. and Banerjee, S. (2022). Overpopulation and its impact, *Van Sangyan* ,9(5) :19-24.
- Jangam, D. (2022). Assessment of soil erosion – Physical, empirical and remote sensing methods. *Van Sangyan*, 9(4) :17-20.
- Mohan, C. (2022). Termite damage and their control in forest nurseries and young plantations. *Van sangyan*. 9(4):22-25.
- Mohan C. (2022). Insect Pests of Forest Seeds and Their Management. In National Virtual Conference on Post-Harvest Management under the theme I- Technologies for reducing post-harvest loss, held during 18-19th May, 2022, NIFTEM, Thanjavur, Tamil Nadu. (Abstract). *In National Virtual Conference on Post-Harvest Management proceedings*.
- Mohan, C. (2022). Eucalyptus gall insect *Leptocybe invasa* (Hymenoptera; Eulophidae) and their integrated management. *Agriculture and food e Newsletter* . 4:511-512.
- Mohan, C. (2022). Leaf gall forming insect *Trioza obsoleta* (Psyllidae; Homoptera) on *Diospyros melonoxylon* and their Management. *Times of Agriculture - e magazine*, (25):130-131.
- Mohan, C. (2022). Occurrence of Sal Heartwood borer *Hoplocerambyx spinicornis* infestation in Chhattisgarh. In international conferences on "Global initiatives in Research, innovation and sustainable development of Agriculture and allied Sciences", held during 06-08th –June, 2022 (virtual mode), Guru Kashi University, Talwandi, Punjab. (Abstract).
- Rajkumar, M., Sekhar, A., and Jain, A. (2022). United Nation's Post- 2020 Global Biodiversity Frame Work: Opportunities for Local Action. *Van Sangyan,* 9(3) :37-40.
- Sekhar, A. and Rajkumar, M. (2022) .Wetlands: Not wastelands. *Van Sangyan*, 9(5) :25-29.
- Vijay, M. K., and Berry, N. (2022). Bamboo seed propagation: Challenges and solutions. *Van Sangyan* ,Vol. 9(5): 8-13.
- Sekhar, A. (2022). Peatlands and Paludiculture for the Indian Subcontinent. *ENVIS Newsletter. Sarovar Saurabh: Wetland Ecosystems including Inland Wetlands*. 17(4): 1-3. ISSN: 0972-3153.
- Vijay, M.K. (May 2022). Nanotechnology based Carbon Nano Tubes (CNTs): An innovative tool for seed quality enhancement. *TFRI newsletter bimonthly* (*March-April*). VOL-2 MAR-APR 2022**.**
- राजकुमार, एम., गुप्ता,डी., बैनर्जी,एस., जैन,ए. (2022). वर्ष 2021 में उष्णकटिबंधीय वनों की हानि. *वन संज्ञान,* 9(5):14-18.
- मोहन, सी. एवं मालवीय, आर. के. (2022). वन रोपणी एवं रोपण में व्हाइट ग्रब एवं दीमक का प्रकोप एवं उसका नियंत्रण. *वन संज्ञान.* 9(5): 30–34.

उ. व. अ. स.
समाचार पत्र

VOL-3 MAY-JUNE 2022

आनुवंशिकी एवं वृक्ष सुधार प्रभाग, उ.व.अ.सं., जबलपुर में बिक्री के लिए उपलब्ध पौधों की प्रजातियां एवं संख्या

उन्नत किस्में– प्रति पौधा – रु. 50

क्रमांक	प्रजातियाँ	उपलब्ध पौधों की संख्या
1	राउवोल्फिया सर्पेन्टाइना टी. एफ. आर. आई **आर.एस–1** (सर्पगंधा)	200
2	राउवोल्फिया सर्पेन्टाइना टी. एफ. आर. आई **आर.एस–2** (सर्पगंधा)	150

बांस की प्रजाति– प्रति पौधा रु. 25

क्रमांक	प्रजातियाँ	उपलब्ध पौधों की संख्या
1	*बम्बुसा बम्बोस* (कटंगा)	**1350**
2	*बंबुसा वल्गारिस* (अंत. हरा)	**110**
3	*बंबुसा नूतन*	**75**
4	*डेंड्रोकलामस स्ट्रिक्टस* (लाठी बॉस)	**940**
5	*डेंड्रोकेलामस लॉन्गिसपैथस*	**100**

पेड़ की प्रजातियां और औषधीय पौधे– प्रति पौधा रु. 25

क्रमांक	प्रजातियाँ	उपलब्ध पौधों की संख्या
1	*टेक्टोना ग्रैंडिस* (सागौन)	200
2	*डलबर्जिया लेटीफोलियॉ* (काला शीशम, रोजवुड)	200
3	*सेलेस्ट्रस पेंनीकुलाट्स* (मालकागिनी, ज्योतिषमती)	100
4	*प्लंबैगो जेलेनिका* (चित्रक)	100
5	*ओरोक्सिलम इंडिकम* (शिवनाग)	50
6	*टेमेरिन्डस इंडिका* (इमली)	150
7	*अजेडेरिक्टा इंडिका* (नीम)	50

विश्राम गृह सुविधा एवं शुल्क

कमांक	पात्र व्यक्तियों की श्रेणी	शासकीय कार्य के दौरान किराया (रू0)		शासकीय कार्य के उपरांत किराया (रू0)	
		रूम	सूट	रूम	सूट
1	क. आई0 सी0 एफ0 आर0 ई0 के अधिकारियो हेतु ख. कन्सल्टेंन्टस एवं अनुसंधान अध्ययेता आई0 सी0 एफ0 आर0 ई0 एवं उसके संस्थानों सहित तथा डीम्ड यूनिवर्सिटी हेतु) ग. पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली के अधिकारियो एवं एक्सपर्ट हेतु घ. राज्य वन विभाग के अधिकारियो हेतु ड. आई0 सी0 एफ0 आर0 ई0 के भूतपूर्व अधिकारियो एवं भूतपूर्व प्रतिनियुक्ति के अधिकारियों हेतु	150	200	200	200
2	आई0 सी0 एफ0 आर0 ई0 के परिवारजन वर्तमान / भूतपूर्व – क. आई0 सी0 एफ0 आर0 ई0 के भूतपूर्व अधिकारियो / कर्मचारियों हेतु ख. आई0 सी0 एफ0 आर0 ई0 के भूतपूर्व प्रतिनियुक्ति के अधिकारियो / कर्मचारियों हेतु			200	300
3	क. स्वायत्य परिषदो एवं वन अनुसंधान (FRI) डीम्ड यूनिवर्सिटी के अंतर्गत आने वाले विश्वविधालय के अधिकारियो / कर्मचारियों हेतु ख. केद्र एवं राज्य के अधिकारी/कर्मचारी – राज्य वन विभाग के अलावा	200	300	400	500
4	आई0 सी0 एफ0 आर0 ई0 संस्थानों के अतिरिक्त अन्य व्यक्तियों हेतु शुल्क			800	750

उपर दी गई तालिका के अलावा देय रखरखाव शुल्क (मेन्टेनेंस चार्जेस) इस प्रकार है :–

आवास का प्रकार	रखरखाव शुल्क (मेन्टेनेंस चार्जेस) ए0सी0 / हीटर सहित (रू0)
रूम	200
सूट	250

उ. व. अ. स.
समाचार पत्र

VOL-3 MAY-JUNE 2022

संरक्षक

श्री जी. राजेश्वर राव, ए. आर. एस.
निदेशक,
उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान,
जबलपुर।

सम्पादक

श्रीमती नीलू सिंह, वैज्ञानिक–जी
समूह समन्वयक (अनुसंधान)
उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान,
जबलपुर।

सह सम्पादक

श्री कौशल त्रिपाठी,वैज्ञानिक–बी,
श्री नीरज प्रजापति,वैज्ञानिक–बी,
श्री निखिल वर्मा,वैज्ञानिक–बी,
उ.व.अ.सं, जबलपुर

तकनीकी सहयोग

श्री हीरालाल असाटी,
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी,
श्रीमति निकिता राय,
वरिष्ठ तकनीशियन
श्री विजय कुमार काले,
आशुलिपिक,
उ.व.अ.सं, जबलपुर

==000===

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें :

निदेशक

अथवा

समूह समन्वयक (अनुसंधान)
उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान,
(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद)
पीओ: आर.एफ.आर.सी., मंडला रोड, जबलपुर- 482 021, मध्य प्रदेश
फोन नंबर:- +91-761-2840010(ओ) फैक्स:- + 91-761-2840484
समूह समन्वयक (अनुसंधान) फोन :0761-2840003
वेबसाइट:- http://tfri.icfre.gov.in
ईमेल:- **dir_ tfri @icfre.org, groupco_tfri@icfre.org**

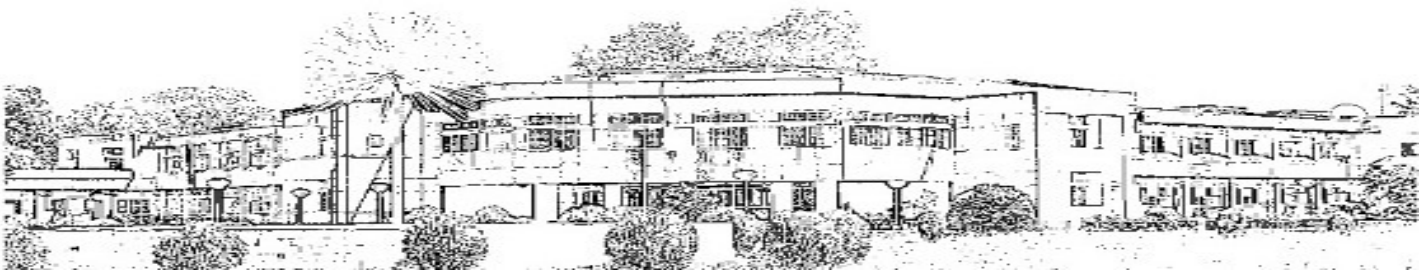

संस्थान के बारे में

मध्य प्रदेश स्थित यह उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर, अप्रैल 1988 में मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र राज्यों सहित मध्य भारत में वनों और वानिकी क्षेत्रों के सतत् विकास के लिए मजबूत अनुसंधान सहायता प्रदान करने के लिए अस्तित्व में आया।

यह भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून (उत्तराखंड) के अंतर्गत नौ क्षेत्रीय संस्थानों में से एक है।

कौशल विकास के लिए वन अनुसंधान केंद्र, छिंदवाड़ा, 30 मार्च 1995 को अस्तित्व में आया। इसे 3 जनवरी 1996 को उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर का एक दूरस्थ केंद्र घोषित किया गया था।

अनुसन्धान कार्य के प्रमुख क्षेत्र

- ❖ विंध्य, सतपुड़ा व मैकल पहाड़ियों व पश्चिमी घाटों के पारिस्थितिकी की पूर्वअवस्था एवं खनन क्षेत्रों का पुनर्वास
- ❖ कृषि वानिकी प्रारूपों का विकास और प्रदर्शन
- ❖ वन संरक्षण
- ❖ जैव उर्वरक और जैव कीटनाशक
- ❖ अकाष्ठ वन उत्पाद
- ❖ जैव विविधता मूल्यांकन, संरक्षण और विकास
- ❖ सतत् वन प्रबंधन
- ❖ रोपण स्टॉक में सुधार
- ❖ जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरण सुधार
- ❖ वन उत्पादों का विकास